यह प्रश्न-पत्र एवं उत्तर पुस्तिका संयुक्त है।

जय गुरु नाना | जय महावीर | जय गुरु राम

श्री साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड, बीकानेर

जैन संस्कार पाठ्यक्रम परीक्षा-2022

समय : 3 घण्टे
12:30 से 3:30 बजे तक

प्रश्न-उत्तर पत्र भाग - 12 आगम

अंक 100

नाम..... पिता/पति का नाम.....

शहर का नाम..... जन्मतिथि..... मोबाइल..... रोल नं .....

नोटः-सभी प्रश्नों के उत्तर दिये गये निर्देशों के अनुसार, निर्धारित स्थान पर, इसी प्रश्न पत्र में लिखें। उत्तर पुस्तिका जाँचने पर यदि यह पुष्टि होती है कि परीक्षार्थी ने दूसरे का सहयोग लिया है अथवा एकाधिक पुस्तिकाओं के उत्तर समान हैं तो उसे नकल किया हुआ मानकर परिणाम निरस्त कर दिया जावेगा। केन्द्र अधीक्षक उपरोक्त प्रश्नोत्तर पुस्तिका परीक्षा समाप्ति के अगले दिन श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.) के पते पर भिजवावें।

प्रश्न 1. उत्तराध्ययन सूत्र 29वां अध्ययन सुयं में आउसं से संजमेणं भन्ते की गाथा तक गाथाओं की शुरूआत का सही चयन कीजिए। **5**

1. दंसण-विसोहिए य णं विसुद्धाए अत्थेगइए जीवे ( )

(अ) संवेगेणं भंते (ब) गरहणयाए णं भंते (स)चउवीसत्थएणं भंते (द) वंदणएणं भंते

2. पिहिय-वयच्छिद्दे पुण जीवे निरूद्धासवे- ( )

(अ) पडिक्कमणेणं भंते (ब) काउस्सग्गेणं भंते (स) निंदणयाए णं भंते (द) सामाइएणं भंते

3. आगार धम्मं च ण चयइ, अणगारिए णं जीवे सारीर माणसाणं ( )

(अ) गुरु-साहम्मिय-सुस्सूसणयाए णं भंते (ब) चउवीसत्थएगं भंते

(स) निव्वेएणं भंते (द) धम्मसद्धाए णं भंते

4. दंसणविसोहिं जणयइ ( )

(अ) सामाइएणं भंते (ब) चउवीसत्थएणं भंते (स) आलोयणाए णं भंते(द) पडिक्कमणेणं भंते

5. वंजणलद्धिं च उप्पाएइ ( )

(अ) तवेणं भंते (ब) परियट्टणए णं भंते (स) संवेगेणं भंते (द) पडिपुच्छणयाए णं भंते

प्रश्न 2. रिक्त स्थाना की पूर्ति कीजिए– **15**

1. धममकहाए .....

..... पभावेइ।।

2. कसाय .....

..... जणयइ।।

3. एगग्गचित्ते णं .....

..... संजमाराहए भवइ।।

4. जहा सूई .....

..... विणस्सइ।।

5. निरालम्बणस्स .....

..... जोगा भवन्ति।।

6. साधुचर्या में .....

.....

..... विश्राम नहीं है।

7. वहाँ .....

..... के अन्तर जितनी भी सुखरूप वेदना नहीं है।

8. तुझे सुरा .....

..... और मधु बहुत प्रिय थी।

9. जहा तुलाए .....

..... मन्दरो गिरी।

10. अवसो .....

..... समिलाजुए।

11. मारणान्तिकीं .....

..... जोषिता।।

12. विविधद्रव्य .....

..... द्विशेषः।

13. एकादयो .....

..... शतेः।।

14. अनुग्रहार्थं .....

..... दानम्।।

15. ईर्या .....

..... समितयः।।

प्रश्न 3. निम्न गाथाओं का अर्थ लिखिए– **30**

1. जाइसरणे समुप्पन्ने मियापुत्ते महिड्ढिए।

सरई पोराणिय जाइं सामण्णं च पुराकयं।।

.....

.....

.....

2. वियाणिया दुक्खविवद्धणं धणं ममत्तबंध च महब्भयावहं।

सुहावहं धम्मधुरं अणुत्तरं धारेह निव्वाणगुणावहं महं।।

.....

.....

.....

3. जम्मं दुक्खं जरा दुक्खं रोगा य मरणाणिय।

अहो दुक्खो हु ससारो जत्थ कीसन्ति जन्तवो।।

.....

.....

.....

4. एगग्गमणसंनिवेसणाए णं चित्तनिरोंह करेइ।।

.....

.....

.....

5. मुत्तीए णं अकिंचणं जणयइ।

अकिंयणे य जीवे अत्थलोलाणं पुरिसाणं अपत्थणिज्जो भवइ।।

.....

.....

.....

6. वयसमाहारणयाए णं वयसाहारणदंसणपज्जवे विसोहेइ।।

.....

.....

.....

7. लोभविजएणं संतोसीभावं जणयइ, लोभवेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।।

.....

.....

.....

8. करणसच्चेणं करणसत्तिं जणयइ। करणसच्चे वट्टमाणे जीवे जहावाई तहाकारी यावि भवइ।।

.....

.....

.....

9. तीव्रमन्दज्ञाताज्ञात भाववीर्यधिकरणविशेषेभ्यस्तद्विशेषः।

.....

.....

.....

10. परात्मनिन्दा प्रशंसे सदसद्गुणाच्छादनोदभावने च नीचैर्गोत्रस्य।।

.....

.....

.....

11. जगत्कायस्वभावौ च संवेगवैराग्यार्धम्।

.....

.....

.....

12. मार्गाच्यवननिर्जरार्थं परिषोढव्याःपरीषहाः।।

.....

.....

.....

13. उत्तमसंहनन स्यैकाग्रचिन्तानिरोधोध्यानम्।

.....

.....

.....

14. एवं करन्ति संबुद्धा पण्डिया पवियक्खणा।

विणियट्टन्ति भोगेसु मियापुत्ते जहा रिसी।।

.....

.....

.....

15. निव्वेएणं दिव्व-माणुस-तेरिच्छिएसु कामभोगेसु निव्वेथं हव्व मागच्छइ।

सव्व विसएसु विरज्जइ।।

.....

.....

.....

प्रश्न 4. निम्न अर्थ को पढ़कर गाथा लिखिए- **20**

1. शरीर, वचन और मन की क्रिया को योग करते हैं।

.....

.....

2. अल्प-आरंभ, अल्प-परिग्रह, स्वभाव की मृदुता और स्वभाव की सरलता, ये मनुष्य-आयु के बंध हेतु हैं।

.....

.....

3. अप्रिय वस्तु के प्राप्त होने पर उसके वियोग के लिए सतत चिन्ता रखना, प्रथम आर्तध्यान है।

.....

.....

4. व्रतों और शीलों के पाँच-पाँच अतिचार हैं। वे क्रमशः इस प्रकार है।

.....

.....

5. जीविताशंसा, मरणाशंसा, मित्रानुराग, सुखानुबंध और निदानकरण मारणान्तिकी संलेखना के ये पाँच अतिचार है।

.....

.....

6. आरम्भपरित्याग करके संसार मार्ग का विच्छेद करता है और सिद्धि-मार्ग को प्राप्त होता है।

.....

.....

7. अपुनरावृत्ति को प्राप्त जीव शारीरिक और मानसिक दु:खों का भागी नहीं होता।

.....

.....

8. क्रोध विजय से जीव क्षान्ति को प्राप्त होता है। क्रोध वेदनीय कर्म का बंध नहीं करता पूर्वबद्ध कर्मों की निर्जरा करता है।

.....

.....

9. प्रथम समय में बंध होता है, द्वितीय समय में वेदन होता है और तृतीय समय में निर्जरा होती है।

.....

.....

10. श्रमण भगवान् महावीर द्वारा सम्यक्त्व पराक्रम अध्ययन का यह अर्थ कहा गया है, प्रज्ञापित किया गया, प्ररूपित किया गया है, दर्शित और उपदर्शित किया गया है। ऐसा में कहता हूँ।

.....

.....

प्रश्न 5. निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखिए- **10**

1. कितने और कौनसे प्रकारों से सिद्ध जीवों का विचार करना चाहिए?

.....

2. शुभनाम कर्म के बंधहेतु कौनसे है?

.....

3. दूसरा आर्त्तध्यान कौनसा है समझाइये।

.....

4. मृगापुत्र का दूसरा नाम क्या था?

.....

5. कापोतीवृति किसे कहा गया है?

.....

6. सम्यक्त्व पराक्रम अध्ययन में कुल कितने प्रश्न पूछे गये है? 37 नम्बर प्रश्न का नाम लिखो।

.....

7. आलम्बनों का क्षय कौनसे प्रत्याख्यान से हो जाता है?

.....

8. व्यंजनों की उपलब्धि किससे होती है?

.....

9. वीतरागता से जीव किनका विच्छेद करता है?

.....

10. केवलज्ञानी अनगार कितनी आयुशेष रहते पर योग निरोध में प्रवृत होता हुआ कौनसा ध्यान ध्याता है?

.....

प्रश्न 6. सही जोड़ी मिलाईए- **5**

गाथा	संबंध	सही जोड़ी (A/B/C/D/E/F)
1. सव्व-दव्वेसु विणीय-तण्हे सीइभूए	(A) सज्झाएणं भंते!	.....
2. मग्गं च मग्गफलं च विसोहेइ	(B) धम्म् कहाएणं भंते!	.....
3. आउय वज्जाओ सत्तकम्म-पगडीओ	(C) पच्चक्खाणेणं भंते!	.....
4. आगमेसस्स-भद्दताए कम्मं निबंधइ	(D) अणुप्पेहाए णं भंते!	.....
5. तित्थधमं अवलंबमाणे महानिज्जरे	(E) पायच्छित्तकरणेणं भंते!	.....
	(F) वायणाए णं भंते!	

प्रश्न 7. नीचे दिए हुए गाथाओं में से अगर कोई पद गलत हो तो उसे रेखांकित करें और कोष्ठक में गलत लिखें। गाथा सही हो तो कोष्ठक में 'सही' लिखें।

1. तवेणं अणण्हयत्तं जणयइ। ( )
2. सहाय-पच्चक्खाणेणं एगीभावं जणयइ। एगीभावे माणे अप्पसद्दे अप्पकलहे है। ( )
3. आहार-पच्चक्खाणेणं जीवियासंस-प्पओगं वोच्छिंदइ। ( )
4. संभोग-पच्चाक्खाणेणं आलंबणाइं खवेइ। आलंबणस्स य आययट्ठिया। ( )
5. जोग-पच्चक्खाणेणं अजोगत्तं जणयइ। अजोगीणं जीवे सम-सुह दुक्खे भवइ। ( )

प्रश्न 8. मृगापुत्र ने संयम यात्रा पर जाने से पहले वस्त्र पर लगी हुई धूल की तरह किसको झटक दिया ? 2

.....

.....

.....

.....

प्रश्न 9. 'मृगापुत्रीय' श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र का कौनसा अध्ययन है और इस अध्ययन में कितने गाथा है? 2

.....

.....

.....

.....

प्रश्न 10. मृगापुत्र की वैराग्यमूलक उक्तियां के कोई दो उदाहरण लिखिए। 2

.....

.....

.....

.....

प्रश्न 11. किन फलो का परिणाम सुन्दर नहीं होता, उस फल का नाम बताओं और उसकी तुलना किससे कि गई है। 2

.....

.....

.....

.....

प्रश्न 12. मृगापुत्र महर्षि ने किस प्रत्याख्यान से अनुत्तर सिद्धि प्राप्त की? 2

.....

.....

.....

.....